कौन स्वतंत्र - कौन परतंत्र?

1. राजनेता लॉर्ड डलहौजी की भांति हमें जाति, मजहब, भाषा के नाम पर बांटने के लिए स्वतंत्र हैं।
2. कथित धर्मगुरु भगवान् बनकर भोले भक्तों को धर्म के नाम पर लूटने को स्वतंत्र हैं।
3. अभिनेता, अभिनेत्री व साहित्यकार इस देश के महापुरुषों व देवियों के चरित्रहनन व इतिहास को नष्ट करने तथा देश की युवा पीढ़ी को कामवासना में धकेलने के लिए स्वतंत्र हैं।
4. उच्च कोटि के शिक्षण संस्थान देशद्रोही तत्वों को प्रोत्साहित वा उत्पन्न करने में स्वतंत्र हैं।
5. भ्रष्ट नेता, अधिकारी व कर्मचारी देश की भोली जनता को लूटने के लिए स्वतंत्र हैं।
6. सत्ता के अभाव में छटपटाते नेता पड़ोसी शत्रु देशों के नेताओं के साथ अपने विरोधी नेताओं के विरुद्ध मीटिंग करने व उनका सहयोग मांगने हेतु स्वतंत्र हैं।
7. भ्रष्ट वा पतित राजनीतिज्ञ भिण्डरवाले की भांति पुनः नये ढंग के अतिवादी अथवा आतंकवादी पैदा करने एवं उनके हाथ में पाकिस्तानी झण्डा देने हेतु स्वतंत्र हैं।
8. कुछ वर्ग ईस्ट इण्डिया कम्पनी की विजय गाथा का उत्सव मनाने, तो कोई आतंकवादियों की स्मृति पर अराजकता फैलाने एवं भारत के टुकड़े करने के नारे लगाने के लिये स्वतंत्र हैं। कोई नहीं सोचता कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने कितने किसानों, श्रमिकों जिनमें दलित भी थे, को कैसे-२ लूटा व यातनाएं दी? जरा सोचें कि अनेक राजपूत राजा अकबर, शाहजहाँ आदि के दरबार में थे, उनकी ओर युद्ध भी लड़ते थे, परन्तु क्या कोई राजपूत संगठन उन मुगलों की विजय पर उत्सव मनाने का विचार भी करता है? कई पण्डित पुजारियों ने भी देश के राजाओं के साथ गद्दारी करके विदेशी आक्रान्ताओं की मदद की, परन्तु क्या उन पुजारियों के वंशजों को विदेशी आक्रान्ताओं की विजय गाथा गाते किसी ने देखा वा सुना है? यदि नहीं, तो मेरे दलित बन्धु क्यों अपना इतना नैतिक पतन कर रहे हैं?
9. राजनेता इन देशविरोधियों को प्रोत्साहित करके देश में आग लगाने को स्वतंत्र हैं।
10. मीडिया अपने ढंग से घटनाओं की पक्षपाती व्याख्या करने में स्वतंत्र है।
11. न्यायमूर्ति माने जाने वाले अपनी न्याय व्यवस्था को चुनौती देने अथवा संसार में भारतीय न्याय व्यवस्था को बदनाम करने के लिए स्वतंत्र हैं।
12. मानवाधिकारवादी व वामपंथी, आतंकवादियों व अपराधियों की वकालत करने वा उन्हें महिमामण्डित करने के लिए स्वतंत्र हैं।
13. विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां इस देश को लूटने के लिए स्वतंत्र हैं।
14. यौन उच्छृंखल युवा व युवतियां समलैंगिकता एवं लिव इन रिलेशन की पशुता जैसे पापों के समर्थन में हुडदंग करने के लिए स्वतंत्र हैं।
15. अंग्रेजी सभ्यता व अपसंस्कृति भारतीय सभ्यता व संस्कृति का चीरहरण करने के लिए स्वतंत्र है।
16. कथित प्रबुद्धजन भारतीय इतिहास, धर्म, ऋषिमुनियों को गालियां देने के लिए स्वतंत्र हैं।
17. लोकतंत्र के दीवाने अपनी उचित वा अनुचित मांगों के लिए हड़ताल, प्रदर्शन, धरने, तोड़फोड़, आगजनी आदि कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र हैं।
18. राजनीतिक पागलपन कहूँ अथवा विदेशी षड्यन्त्र, हमारे किसानों को जीन परिवर्तित (GM) बीज देकर देश की जनता को विनाश की ओर ले जाने हेतु सरकारें स्वतंत्र हैं।

प्लास्टिक के चावल, पत्तागोभी आदि की खबरें, यदि सत्य हैं, तब यहाँ हर प्रकार के कसाई स्वतंत्र हैं।

19. कसाई निर्ममतापूर्वक पशुओं को मारने, मांसाहारी मानव किसी भी जानवर को खाने तथा भारतीय सरकारें मांस निर्यात करने हेतु स्वतंत्र हैं परन्तु गरीब किसान बैलगाड़ी में थोड़ा अधिक भार ढोने के लिए भी दण्डनीय है।
20. निजी चिकित्सालय, विद्यालय, व्यापारी व उद्योगपति इस देश की नासमझ जनता को लूटने हेतु स्वतंत्र हैं।

आज देश में ऐसी पापिनी स्वतंत्रता का निर्मम ताण्डव हो रहा है। हमारे इस अभागे देश में यदि कोई परतन्त्र और विवश हैं, तो ये हैं-

1. सत्य सनातन वैदिक धर्म व वेदोक्त संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान एवं मां मानवता।
2. मां भारती व भाषा भारती।
3. निर्धन कृषक, श्रमिक व दुर्बल नागरिक।
4. भारतीय गौरवपूर्ण परम्पराएं।
5. भारतीय गौरवशाली इतिहास।
6. सदाचार, नैतिकता, सामाजिक समरसता, यथार्थ पंथनिरपेक्षता, यथार्थ राष्ट्रभक्ति।
7. सभी सज्जन, सरल नागरिक।
8. प्रतिभावान् कथित सवर्ण, आरक्षण के दानव से पीड़ित।
9. करोड़ों कथित दलित, आज भी छूआछूत से पीड़ित।
10. हमारे महान् पूर्वज एवं देश के बलिदानी क्रान्तिकारियों का आत्मा।

अहो! क्या हो गया है मेरे देश को! पहले देश के कुछ लोभी, गद्दारों ने विदेशी आक्रान्ताओं को आमंत्रित किया, आज तो हजारों मीरजाफर आक्रामक हो रहे हैं और उन्हें अपनी करतूतों पर न लज्जा है, न भय। भोली जनता अपने-२ नेताओं, जातिवादी झण्डाधारकों अथवा साम्प्रदायिक कथित गुरुओं, मुल्लाओं, पादरियों के पीछे भेड़ बन के चल रही है। उसे पता नहीं कि हमारा देश कुछ वर्षों पश्चात् ऐसे विनाश भंवर में फंसेगा कि कोई बचाने वाला पैदा नहीं होगा। ध्यान रहे कि इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मिल जाएंगे कि जिस गद्दार ने देश से गद्दारी करके विदेशी का साथ दिया, वह भी नष्ट हो गया। देश है, तो हम सब हैं और देश नहीं रहेगा, तो कोई नहीं बचेगा, तब किस पर कौन शासन करेगा, जरा सोचें। परमात्मा ने बुद्धि, विवेक दिया है, उसका कुछ तो उपयोग करें अन्यथा आपकी भावी पीढ़ी आपकी करतूतों पर खून के आंसू बहाएगी।

जागो भारत जागो!

यदि आप मेरे मत से सहमत हैं तो कृपया इस संदेश को व्यापक स्तर पर प्रचारित करने व करवाने का पूर्ण प्रयास करें।